11

बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन एक परिचय

पद्मा यादव*

बच्चों की शिक्षा के प्रारंभिक वर्षों में भाषा और गणित कौशल का निर्माण करने और दिशानिर्देश प्रदान करने के लिए भारत सरकार ने बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन आरंभ किया है। जिसे नेशनल इनिशिएटिव फ़ॉर प्रोफ़िशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टेडिंग एंड न्यूमेरेसी (निपुण भारत) नाम दिया गया है। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान विकसित करना है। मिशन का दृष्टिकोण देश में एक व्यापक विश्वस्तरीय वातावरण तैयार करना है, जिससे कक्षा 3 के अंत तक बच्चे लिखने, पढ़ने एवं गणितीय समझ की क्षमता प्राप्त कर सकें। मिशन के तहत 3 से 9 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों के पढ़ने, लिखने और संख्या ज्ञान से जुड़ी आवश्यकताओं को पूर्ण किया जाएगा। तद्नुसार, उन संभावित कारणों को भी खोजा जाएगा, जिनके कारण सीखने में बाधा आ रही है। प्री-स्कूलिंग एवं प्रारंभिक स्तर के मध्य मज़बूत और सुचारु संपर्क स्थापित हो सके इस पर ज़ोर दिया गया है। बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान के लक्ष्यों को हासिल करने के लिए वर्ष 2026–2027 की समय सीमा तय की गई है।

देश में नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीति लागू हो गई है जिसे *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* कहा गया है। इस नीति के अंतर्गत औपचारिक संस्थागत शिक्षा व्यवस्था में प्री-स्कूलिंग को शामिल किया गया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में कक्षा तीन तक के बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान (एफ़.एल.एन.) विकसित करने पर विशेष ज़ोर दिया गया है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में कहा गया है कि यह नीति विद्यार्थियों से प्रत्यक्ष रूप से तभी जुड़ सकेगी, जब आधारभूत शिक्षा (लेखन, पठन आधारभूत अंकगणित इत्यादि) उन्हें प्राप्त हो। नीति में प्रत्येक छात्र को एफ़.एल.एन. से जोड़ने को एक चुनौती के तौर पर लिया गया है।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान का अर्थ

बुनियादी साक्षरता का अर्थ है— मौखिक भाषा विकास, डिकोडिंग (ध्वनि और आकार में तालमेल), पढ़ने का प्रवाह, पाठ बोधन एवं लेखन और बुनियादी संख्या ज्ञान का अर्थ है— संख्या बोध, आकार और स्थानिक संबंध, नाप, डेटा संधारण आदि।

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन की आवश्यकता

वर्तमान में स्कूली शिक्षा के अंतर्गत सीखने का स्तर गंभीर चिंता का विषय है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* द्वारा यह तथ्य प्रस्तुत किया गया है कि वर्तमान में

* *प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नयी दिल्ली 110 016

पाँच करोड़ से अधिक बच्चों ने प्राथमिक स्तर पर बुनियादी साक्षरता एवं गणितीय समझ प्राप्त नहीं की है। बुनियादी शिक्षा से ही बच्चे के भविष्य में सीखने का मार्ग प्रशस्त होता है। यदि सीखने के बीच लगातार आ रहे अधिगम अंतराल को कम नहीं किया गया तो बच्चे सीखने में पिछड़ जाते हैं एवं परिणाम आशा अनुरूप प्राप्त नहीं होते हैं।

नेशनल इनिशिएटिव फ़ॉर प्रोफिशिएंसी इन रीडिंग विद अंडरस्टेडिंग एंड न्यूमेरेसी (निपुण भारत)

भारत सरकार ने बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन को निपुण भारत नाम दिया है। इसके अंतर्गत बच्चों के सीखने के मार्ग में आ रही बाधा को दूर करने के प्रयास किए जा रहे हैं। खेल एवं सक्रियता आधारित बुनियादी साक्षरता के लिए अनुकूलन वातावरण तैयार किया जा रहा है। देश में असंख्य बच्चे हैं जिनके घर में साक्षरता एवं गणितीय समझ का माहौल नहीं है। इस तथ्य के पर्याप्त प्रमाण हैं कि बच्चों के जीवनकाल के शुरुआती वर्षों में उनके सीखने की गति तीव्र होती है और इस दौरान बच्चे को प्राप्त प्रत्येक सकारात्मक अनुभव उसके आजीवन सीखने एवं विकास पर प्रभावकारी होता है। अतः, *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में कहा गया है कि बुनियादी शिक्षा को लेकर उत्पन्न संकट को जल्द दूर करने के प्रयास अनिवार्य रूप से करने होंगे ताकि स्कूलों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के स्तर का उन्नयन की जा सके। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* का लक्ष्य है कि प्रत्येक बच्चे के लिए बुनियादी साक्षरता एवं गणितीय समझ प्राप्त करना सहज हो।

निपुण भारत मिशन का लक्ष्य

बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान मिशन जिसे निपुण भारत मिशन कहा गया है, का मुख्य फ़ोकस 3 से 9 वर्ष के आयु वर्ग के बच्चों पर है। जिसमें प्री-स्कूल से कक्षा 3 तक के बच्चे शामिल हैं। बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन का लक्ष्य है कि सभी बच्चों को पढ़ने, प्रतिक्रिया करने, स्वतंत्र रूप से लिखने, संख्या, माप और आकार के क्षेत्र में तर्क को समझने और समस्या के समाधान के लिए स्वतंत्र एवं सक्षम बनाना। बुनियादी शिक्षा में बच्चे के समग्र विकास पर ज़ोर दिया जाता है। मिशन का उद्देश्य है कि कक्षा के सभी बच्चों को प्रसन्नता, आत्मविश्वास से परिपूर्ण, स्वतंत्र सोच एवं सीखने की ललक रखने वाला बनने में मदद मिल सके।

- खेल, खोज और गतिविधि-आधारित शिक्षा-शास्त्र को शामिल करके, इसे बच्चों की दैनिक जीवन स्थितियों से जोड़कर, बच्चों की घरेलू भाषाओं को औपचारिक रूप से शामिल करके एक समावेशी कक्षा वातावरण सुनिश्चित करना।
- बच्चों को समझ के साथ पढ़ने-लिखने के कौशल विकसित करने के लिए, उन्हें स्वतंत्र पाठक एवं लेखक बनने के लिए प्रेरित करना ताकि वे स्थायी रूप से लिखने और पढ़ने में सक्षम हो सकें।
- बच्चों को संख्या, माप और आकार के क्षेत्र में तर्क को समझने; उनमें संख्यात्मकता और स्थानिक समझ विकसित करने, कौशल के माध्यम से समस्या समाधान करने में सक्षम बनाना है।
- बच्चों को उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराना, जो उन्हें सांस्कृतिक विरासतों से भी अवगत कराए। ये सामग्री उनकी स्थानीय भाषा अथवा मातृभाषा में उपलब्ध हो।
- एफ़.एल.एन. मिशन का उद्देश्य है— शिक्षकों, प्रधानाध्यापकों एवं अकादमिक प्रशासकों की क्षमताओं के उन्नयन पर सतत फ़ोकस करना।

- बच्चों की उच्चतम शिक्षा की मज़बूत आधार-शिला के लिए शिक्षकों, माता-पिता, समुदाय एवं नीति निर्माताओं का परस्पर सक्रिय जुड़ाव हो।
- पोर्टफ़ोलियो, सामूहिक व संयुक्त प्रोजेक्ट वर्क, खेल, रोल प्ले, मौखिक परीक्षण, क्विज़ एवं शॉर्ट टेस्ट इत्यादि के माध्यम से शिक्षा के स्तर का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.)— आधारभूत अधिगम

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा प्रस्तावित नयी 5+3+3+4 शिक्षा प्रणाली में, 3 साल की उम्र से प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) को एक मज़बूत आधारशिला के रूप में शामिल किया है, जिसका उद्देश्य बेहतर समग्र शिक्षा, विकास और कल्याण को बढ़ावा देना है। *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* में कक्षा एक से पूर्व तीन वर्ष से छः वर्ष की आयु के मध्य, तीन साल की आँगनबाड़ी/प्री-स्कूलिंग एवं बालवाटिका शिक्षा की व्यवस्था प्रस्तावित है। प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा को सतत विकास लक्ष्य (एस.डी.जी.) के संदर्भ में भी विशिष्ट लक्ष्य माना गया है। एस.डी.जी. 4.2 के तहत वर्ष 2030 तक यह सुनिश्चित किया गया है कि सभी लड़के एवं लड़कियों (वंचित समूहों, दिव्यांगों एवं स्वास्थ्य के स्तर पर पिछड़े सहित) को उच्च गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक देखभाल एवं प्री-स्कूल शिक्षा प्राप्त हो ताकि वे प्राथमिक शिक्षा के लिए क्षमतावान हो सकें। विकास के दृष्टिकोण से प्रत्येक बच्चे के लिए प्रारंभ के वर्ष महत्वपूर्ण होते हैं, क्योंकि इसी आयु में उनका विकास अन्य आयुवर्ग की अपेक्षा तीव्र गति से होता है। इन्हीं प्रारंभिक वर्षों के वर्षों दौरान मस्तिष्क सर्वाधिक लचीला एवं सीखने की दृष्टि से अनुकूल होता है। बच्चे के मस्तिष्क का 85 प्रतिशत विकास 6 वर्ष की आयु से पूर्व ही हो जाता है। बच्चे का विकास न केवल बच्चे के पोषण और स्वास्थ्य से प्रभावित होता है, बल्कि सामाजिक अनुभवों एवं वातावरण का भी प्रभाव इस पर होता है। इसलिए प्री-स्कूलिंग की व्यवस्था, प्रावधान एवं कार्यक्रमों को बेहतर तरीके से लागू करना चाहिए। अगर प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) अच्छी होगी तो बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान भी प्रबल होगी। देश में ई.सी.सी.ई. प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा संस्थानों के माध्यम से प्रदान की जाती है। जिसमें (i) पहले से काफी विस्तृत और सशक्त रूप से अकेले चल रहे आँगनबाड़ी से, (ii) प्राथमिक विद्यालयों के साथ स्थित आँगनबाड़ी, (iii) वर्तमान प्राथमिक विद्यालयों के परिसर में स्थित पूर्व प्राथमिक विद्यालय एवं (iv) अकेले चल रहे प्री-स्कूल (*राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*)।

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल एवं शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच के लिए, आँगनबाड़ी केंद्रों को उच्च गुणवत्तायुक्त बुनियादी संरचना, खेल सामग्री एवं पूर्ण रूप से प्रशिक्षित आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं को सशक्त बनाया जाएगा। प्रत्येक आँगनबाड़ी या प्री-स्कूल में समृद्ध शिक्षा के वातावरण के लिए बेहतर तरीके से डिज़ाइन किया हुआ हवादार, बाल-सुलभ और निर्मित भवन होगा। आँगनबाड़ी केंद्रों के बच्चों को गतिविधियों से भरे पर्यटन करेंगे और उन्हें अपने आसपास के प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों और छात्रों से मिलेंगे, ताकि आँगनबाड़ी केंद्रों से प्राथमिक विद्यालयों में जाने को सुगम (सुचारु) बनाया जा सके।

आँगनबाड़ियों को स्कूल परिसरों/समूहों के साथ पूर्ण तरीके से एकीकृत किया जाएगा और स्कूल परिसर में आयोजित होने वाले विभिन्न कार्यक्रमों में परस्पर भाग लेने के लिए आँगनबाड़ी के बच्चों, अभिभावकों और शिक्षकों को आमंत्रित किया जाएगा। यह परिकल्पना की गई है कि 5 वर्ष की आयु से पहले प्रत्येक बच्चे को प्रारंभिक कक्षा या बालवाटिका (कक्षा 1 से पहले) में स्थानांतरित कर दिया जाएगा, जिसमें एक प्रारंभिक बाल्यवस्था देखभाल शिक्षा में योग्य शिक्षक हो।

आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ़.एल.एन.) मिशन में शिक्षा संस्थानों की भूमिका

एफ़.एल.एन. मिशन को शिक्षा मंत्रालय द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है और सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय, राज्य स्तरीय, ज़िला, ब्लॉक एवं स्कूल स्तर पर एक पाँच स्तरीय क्रियान्वयन तंत्र स्थापित किया गया है। कार्यक्रम को वरीयता के साथ ज़ोर देते हुए मिशन मोड में लागू किया गया है। रा.शै.अ.प्र.प. स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में देश की अग्रणी शैक्षिक संस्था है और यह संस्था बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के राष्ट्रीय उद्देश्य को पूर्ण करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा निष्ठा 3.0 बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान ऑनलाइन शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है जो आप रा.शै.अ.प्र.प. की आधिकारिक वेबसाइट पर जाकर देख सकते हैं। रा.शै.अ.प्र.प. ने शिक्षा मंत्रालय के साथ मिलकर एफ़.एल.एन. फ़्रेमवर्क बनाया है जिसमें प्री-स्कूल से लेकर कक्षा 3 तक के सीखने के प्रतिफल शामिल हैं। ये सीखने के प्रतिफल प्रगतिशील हैं। शिक्षक इन प्रतिफलों से ये आकलन लगा सकते हैं कि प्री-स्कूल एक, प्री-स्कूल दो, प्री-स्कूल तीन, कक्षा एक, दो और तीन में बच्चों से क्या आशा है।

रा.शै.अ.प्र.प. के साथ-साथ सी.बी.एस.ई. की भी अहम भूमिका है। सी.बी.एस.ई. को बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान योग्यता आधारित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्राथमिक शिक्षकों की क्षमता निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है। इस उद्देश्य के लिए सी.बी.एस.ई. को प्राथमिक स्तर पर उत्कृष्ट शिक्षकों की पहचान कर एक समूह बनाना है, जो सरकारी प्राथमिक शिक्षकों का मार्गदर्शन करेगा और प्राथमिक स्तर पर शिक्षकों को मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए ई-सामग्री भी विकसित करेगा, जिसमें पाठ योजनाएँ, नवीन शिक्षा-पद्धतियों का उपयोग आदि शामिल होगा। केंद्रीय विद्यालय संगठन यह सुनिश्चित करने के लिए प्रयास करेगा कि 2025 तक सभी बच्चे बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान प्राप्त कर सकें। के.वी.एस. प्रत्येक बच्चे की प्रगति को ट्रैक करेगा, मॉडल स्कूलों को विकसित करेगा, योग्यता-आधारित शिक्षा पर बल देगा। के.वी.एस. में सरकारी प्राथमिक विद्यालयों के लिए प्रदर्शन कक्षाएँ होंगी और के.वी.एस. के सभी प्राथमिक शिक्षकों को बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान और उससे जुड़ी विभिन्न शिक्षापद्धतियों के बारे में प्रशिक्षित किया जाएगा।

राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। इस दिशा में पहला कदम एफ़.एल.एन. लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए बहु-वर्षीय कार्य योजना तैयार करना, शिक्षकों की पर्याप्त संख्या में उपलब्धता सुनिश्चित करना, बुनियादी कक्षाओं में

नामांकित प्रत्येक बच्चे का डेटाबेस तैयार करना, आवश्यकताओं का मानचित्रण करना और प्राथमिक विद्यालयों में बुनियादी सुविधाएँ सुनिश्चित करना ज़रूरी होगा।

इन सभी बातों के अलावा, राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को बच्चों को समय पर पाठ्यपुस्तकें और वर्दी उपलब्ध कराना है; वित्तीय अनुमान तैयार करना है; शिक्षकों को अकादमिक सहायता प्रदान करने के लिए सलाहकारों के एक समूह की पहचान करने की भी आवश्यकता होगी। स्कूल व सार्वजनिक पुस्तकालयों को शिक्षण प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग बनाया जाएगा, जिसे समाज और विशेष रूप से माता-पिता को उपलब्ध कराया जाएगा। स्कूल की सफलता की कहानियाँ, शुरु की गई नयी प्रथाएँ, नयी तकनीकों आदि का लेखन एवं दस्तावेज़ीकरण किया जाएगा। साथ ही एस.सी.ई.आर.टी., डाइट, बी.आर.सी., सी.आर.सी., एन.जी.ओ., एस.एम.सी., समुदाय और माता-पिता, स्वयंसेवक और निजी स्कूल जैसे कई अन्य हैं जिनकी एफ़.एल.एन. मिशन के कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका है। स्कूल-आधारित मूल्यांकन के लिए एफ़.एल.एन. के अंतर्गत, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा (के.वी.एस./जे.एन.वी./सी.टी.एस.ए./सी.बी.एस.ई. स्कूलों के लिए) छात्र प्रगति कार्ड तैयार किया जाएगा और एस.सी.ई.आर.टी. इसे राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के छात्रों के लिए बुनियादी वर्षों में अपनाएँगी/अनुकूलित करेंगी। यह प्रगति कार्ड समग्र, 360 डिग्री, बहु-आयामी होगा, जो सीखने के कौशल और मूल्यों के साथ-साथ संज्ञानात्मक, भावनात्मक, सामाजिक-भावनात्मक और मनोप्रेरणा डोमेन में प्रत्येक शिक्षार्थी की प्रगति के साथ-साथ लाइफ़ स्किल को भी बहुत विस्तार से दर्शाएगी। एफ़.एल.एन. मिशन के प्रभावी कार्यान्वयन में डाइट की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होगी। इसके लिए डाइट को ज़िला स्तर पर एक स्वायत्त संस्था के रूप में उभरने के लिए प्रोत्साहित किया जाना है जिसमें कार्य करने के लिए लचीलापन हो और ज़िले की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने में सक्षम हो। डी.ई.ओ. और बी.ई.ओ. को सार्वभौमिक बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करने में ज़िला और ब्लॉक स्तर पर मिशन के हिस्से के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी है। बी.आर.सी. और सी.आर.सी. एक महत्वपूर्ण केंद्र की तरह काम करेंगे।

निष्कर्ष

बच्चों के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में प्रधान शिक्षक और शिक्षकों को महत्वपूर्ण कदम उठाना होगा, जैसे— शिक्षकों का क्षमता वर्धन, बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान दक्षता प्रदान करने के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास के माध्यम से सहयोग देना, एफ़.एल.एन. मिशन के लिए सामुदायिक भागीदारी कार्यनीतियों की योजना बनाने और उन्हें लागू करने में एक प्रमुख भागीदार के रूप में काम करना। बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान मिशन के कार्यान्वयन की निगरानी में माता-पिता/अभिभावक को स्कूल में सक्रिय भूमिका निभाने की आवश्यकता होगी, जैसे कि सामुदायिक जागरूकता और भागीदारी के प्रयासों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में एस.एम.सी., समुदाय और अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी, एस.एम.सी. और समुदाय यह सुनिश्चित करेंगे कि सभी

स्कूली बच्चों की नियमित स्वास्थ्य जाँच हो और और पौष्टिक भोजन उपलब्ध करवा कर बच्चों के पोषण और स्वास्थ्य का ध्यान रखा जाए, राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को सभी कक्षा 3 तक के छात्रों की बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान प्राप्त करने के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में योगदान करने के लिए स्थानीय स्वयंसेवकों (वालंटियर्स) को शामिल करने के लिए अपने दिशानिर्देश तैयार करना चाहिए, जैसे— वन ऑन वन ट्यूटरिंग (एक के साथ एक का पढ़ना), एफ़.एल.एन. मिशन में पीयर-ट्यूटरिंग और स्वयंसेवी गतिविधियों को बढ़ावा देने के लिए अभिनव मॉडल स्थापित करना, साथ ही शिक्षार्थियों का सहयोग करने के लिए अन्य कार्यक्रम शुरु करना, समुदाय का प्रत्येक साक्षर सदस्य का एक छात्र को पढ़ना सिखाने के लिए प्रतिबद्ध होना आदि। राष्ट्रीय एफ़.एल.एन. मिशन के सफल कार्यान्वयन में निजी स्कूलों की महत्वपूर्ण भूमिका है। उनकी भूमिका उन्हें बुनियादी शिक्षा के महत्व और बच्चों के सीखने के परिणामों पर इसके प्रभाव के बारे में जागरूकता बढ़ाने की होगी।

संदर्भ

रा.शै.अ.प्र.प. 2020. *एफ़एलएन मिशन फ़्रेमवर्क दिशानिर्देश.* राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली.

महिला एवं बाल विकास मंत्रालय. 2013. *आरंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति.* महिला एवं बाल विकास मंत्रालय, भारत सरकार.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* भारत सरकार. https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf